सीताराम सीताराम सीताराम

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

❀ श्री जानकी बल्लभो विजयते ❀

सूक्ष्म अष्टयाम प्रसंग

रचयिता—

अनन्त श्री स्वामी

श्री जानकीशरण जी महाराज

(मधुकर)

तच्चरणार विन्द भ्रमर

श्री सीताशरण जी महाराज

प्रकाशकः—

श्री राम गुलाम शरण जी

श्री चारुशीला बाग, श्री जानकीघाट श्रीअयोध्याजी

सर्वाधिकार स्वरक्षित

प्रथम वार ५००] सन् १९६४ [नित्य सप्रेम पाठ

श्रीसीताराम प्रेस, अयोध्या जी में मुद्रित ।

सीताराम सीताराम सीताराम

* भूमिका *

परमहंस किसको कहते हैं कि जो परात्पर ब्रह्म के भक्ति प्रपत्ति भेदों से प्रगट होने वाला अनुराग रस पूरित सरोवर उस में श्री सीताराम जीके दम्पति विलास के दिव्य गुण रूप मोतियों को खाता है। इस ग्रन्थ के अन्दर एक २ छन्द मोती हैं इन मोतियों को हंस ने अपने बच्चोंके पालने के लिये अपने पेट से उगल कर पुस्तक में रख दिया है। जो हंस का बच्चा हो उसी को ये मोतियां पचेंगी। यदि कोई बगुला हंसों की स्पर्द्धा करता हो तो वह इन मोतियों को नहीं खा सकता है। यदि लोक ईषणा बश कहीं खा गया तो पेट की पीड़ा से मरता है। यह भावुक भक्तों का चारा है।

मुझे हर्ष तो इस बात का है कि भगवान् ने मेरे द्वारा एक अपना भक्त ऐसा भी प्रगट कर लिया कि जो मेरे लोक कारुणिकता के पूरे सहायक हुवे। जिसमें भगवत कृपा पात्र भावुक जन अपने भजन के देश में प्रवेश करके दिव्य दम्पति के विलाश रत्नों की हार पहिरेंगे।

अतः महा भक्त श्री सीताशरण जी को बार बार धन्यवाद है।

जानकीशरण मधुकर

श्री चारुशीला मन्दिर

ता० १९-९-६४ ई०　　श्री चारुशीला बाग श्री जानकीघाट।

❀ श्री गुरु मंगलाचरण ❀

बन्दौं श्री गुरुदेव चरण पंकज सुखदाई।
जिन करि कृपा अपार लियो दीनहिं अपनाई ॥१
जाकी कृपा कटाक्ष पाय मैं कवि कहलायो।
निज स्वरूप करि कृपा मोहिं जिनने बतलाये ॥२
उन श्री परम उदार को कोटिन बार प्रणाम है।
चरण कमल रज शीश धरि लह्यो अचल विश्राम है ॥

❀ सर्वेश्वरी श्री चारुशीला जू की स्तुति ❀

भई प्रगट सु कन्या त्रिभुवन धन्या चन्द्रकान्ति हितकारी।
जग मंगल जन्या मुनि मन मन्या चारुशिला सुकुमारी ॥१
तन द्युति अति भारी रवि शशि वारी बलिहारी छबि भारी।
जेहि सम नहिं कोई त्रिभुवन सोई रुचिमय तन जगधारी ॥२
सिय बैभव रूपा अलिगन भूपा सर्बेश्वरी अनूपा।
गुन शील उदारा प्रेम अगारा परा भक्ति सुखरूपा ॥३
साकेत सु धामा पूरण कामा सीतापति अनुकूला।
जेहिं बेद बखानै कपितन भानै अँज्जनि हियसुखमूला ॥४
परकारण ईश्वर परतम सियवर तिनकी कीर्तिस्वरूपा।
सो भवभय भंजन मुनि मन रंजन प्रगटीं अमल अनूपा ॥५
जय अरिजित प्यारी भाग हमारी जन्मी सुता तुम्हारी।
जिन चरण कृपा ते सिय वर नाते पूजतिं आश हमारी ॥६
स्तुति सुख रूपा भूसुर भूपा कीन्ह सतानन्दादी।
सुनि सिय पितु माता गोधन दाता विप्र चरण बन्दादी ॥७
जय जय चहुँ ओरा दान अथोरा देव सुमन भरि लाये।
नभ दुन्दुभि बाजी मंगल गाजी शौन्दर्य सुख न समाये ॥८

दोहा:-प्रगट भई सिय सहचरी सर्बेश्वरी अनूप।
मध्य दिवस बैसाख कुज पूरण चन्द्र स्वरूप ॥१

❀ शुभ कामना ❀

सवैया

(१) दोउ छैल छबीले रंगीले सदा, रस रंग'रँगे रहें श्यामल गोरी।
बलिहार रहें ललि लाल परस्पर, माधुरी पान करें चित चोरी ॥
सर्बेश्वरि चारुशिलादि अलीं, छबि पानकरें दोउ परत्नणतोरी।
गुनशीला हृदयअभिलाष यही, चिरजीवें श्रीराजकिशोर किशोरी ॥

(२) दोउ श्यामलगौर किशोर किशोरी, सदा निवसें हियमाहिं हमारे।
रस प्रेम पगे हँसि कन्ठ लगे, छबि पान करें भुज अँशन धारे ॥
रसिया दोउ चन्द्र चकोर समान, पियें अधरामृत नेह सम्हारे।
गुनशीला सदा चिरजीवें किशोर, किशोरी यही अभिलाष हमारे ॥

(३) दोउ नित्य निकुंज बिहार करो, मिलि श्यामलगौर मनोहरजोरी।
बलिहार सदा लखि रूप अनूप, परस्पर दोउ महा रस बोरी ॥
भुज अँश दिये अधरामृत पीवत, मन्द हँसें दोऊ चित चोरी।
गुनशीला मनाय कहे बिधिसे, चिर जीवें श्रीराजकिशोरकिशोरी ॥

(४) रस पागे रहें लिल लाल सदा, उर लागे रहें सुख सिन्धुसमाये।
दोउ चन्द्र चकोर समान बने, छबि पान करें दृग सों दृग लाये ॥
त्रण तोरि उतारें सु राई लोन, पगे अनुराग सनेह बढ़ाये।
गुनशीला सदा जोरी चिर जीवें यही विधि से कर जोरि मनाये ॥

छन्दरोला:-जय रघुराज किशोर, जयति मिथिलेश किशोरी।
जय सुखमा सुख सिन्धु मनोहर रस मय जोरी ॥१
जय जनकजा बिदेह लली जय अवनि कुमारी।
जय अवधेश कुमार इहै अभिलाष हमारी ।२
अरस परस भुज अँश दिये हँसि हँसि चितचोरत।
गुनशीला बलिहार, युगल छबि लखि त्रण तोरत ॥३
गुनशीला यहि भाँति लखौं नित छटा तिहारी।
करि सु कृपा अति बेगि पूजिये आश हमारी ॥४

पदः-(१) सदा चिर जीवो युगल किशोर। दोउ के दोउ रंग रँगे रहो नित रसिया श्यामल गोर ॥ दोउ चकोर दोउ चन्द्र सु छबि नित लखो दृगन दृग जोर। मन्द हँसनि बतरानि हृदय लगि चितवनि में चित चोर ॥ मंगल गावत रहें सखी गन, रस की उठत हिलोर। गुनशीला यह युगल माधुरी, तजि न चहौं कछु और ॥

पद:-(२) दृगन बिच बिहरो दोउ सरकार। रस रंग रँगे पगे आशिक दोउ, ऊपर दोउ बलिहार ॥ अरस परस लखि रूप माधुरी, बने रहो गलहार। हँसि हँसि बातें करत परस्पर; भरे परम सुख प्यार ॥ मधुर मधुर गावत छबि छावत, दोऊ रसिक उदार। सर्बस छीनि लेत वाको हँसि जेहि देखत एक बार॥ गुनशीला बर्षाय सुमन सखि बोलहिं जय जयकार। अबिचल जोरी रहे सदा ही यह अभिलाष हमार ॥ दृगन बिच···॥

पद:-(३) सदा रहो सुख सिन्धु समाये। चन्द्र चकोर बने दोउ प्यारे, प्रमुदित मन सों मनहिं मिलाये ॥ बिलसत रहो सनेह भरे दोउ हँसि हँसि दोउ कहँ कन्ठ लगाये। अधर सुधारस पियत पियाबत, सदा एक टक सुधि बिसराये ॥ प्रेमावेश श्याम गोरी इव, गोरी श्यामल रूप लखाये। गुनशीला त्रण तोरि अशीशत, दोउ पर बार बार बलिजाये ॥ सदा रहो ···॥

छं०रो०:-सदा रहो अनुराग पगे दोऊ पिय प्यारी।
युगल सु छबि नित लखौं यही अभिलाष हमारी ॥१

दोहा:-दृग चकोर करि बिधु बदन लखि लखि दोउ बलिहार।
खात खवावत पान दोउ, पावत मोद अपार ॥१

भक्त जन मानस निवासाय, रसिक जन प्राण बल्लभाय, परम प्रेम स्वरूपाय, आनन्द रस निमग्नाय श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः
।। श्री मति सर्वेश्वरि श्री चारुशीलायै नमः ।।

* सूक्ष्म अष्टयाम प्रसंग *

दोहाः-एक याम जब शेष रह; रजनी मन अभिराम।
जगै उपासक तेहि समय, सुमिरत सीताराम ।।१।।
श्री गुरु चरण सरोज में, करि मन मुदित प्रणाम।
लहि आयसु आसन तजै, हिय ध्यावत सियराम ।।२।।

छन्द रोलाः—सौच आदि करि क्रिया सबिधि स्नान बनावे। पुनि सुचि आसन बैठि भाल में तिलक लगावे ।।१।। बहुरि भावना माहिं ललित निज करै शृँगारा। नख सिख भूषन बसन सजै अँगन अनुसारा ।।२।। लै निज सखिन समाज, जाइ आचारज पासा। पूजै चरण सरोज हृदय भरि परम हुलासा ।।३।। आचारज संग जाइ जहाँ सर्वेश्वरि राजीं। चहुँदिशि सखी समाज सौज सेवा कर साजीं ।।४।।

दोहाः-बिधिवत करि पूजन हरषि, लहि तिनको अति प्यार।
सो सुख गुनशीला नहीं, कहि कोउ पावै पार ।।३।।
सर्वेश्वरि के संग पुनि, रंगमहल को जाइ।
हर्षि जगावै सिय पियहि मृदु स्वर यन्त्र बजाय ।।

छन्द रोलाः-गावै रस मय गान श्रवण मन आनंद कारी। बीती रजनी भोर भयो जागिय पिय प्यारी ।।५।। एक एक पर्दा खोलि मुदित परिक्रमा करिके। गावै भैरवि राग हृदय में आनँद भरिके ।।६।।

पदः-(१) भोर भयो जगहु दोउ प्यारे। पिय रस रंग रँगी सिय स्वामिनि, सिय अनुराग पगे पिय प्यारे ॥ रति रंग रंगे पगे बीती निशि सिथिल भये दोउ के अँग सारे। अब जागहु सुख देहु अलिन कहँ गुनशीला नयनन के तारे ॥

(२) भोर भयो जगहु दोउ रसिया सखियन जीवन प्राण अधारे। बन्दीविरद बेदध्वनि महिसुर, करत हृदय अतिहोतसुखारे ॥ चहुँ दिशि ते जुरिआईं अलीगन, रसमय अनुपम राग उचारे। शुक सारिका हंस दर्शन हित रहे निहारि शैन के द्वारे ॥ युगल सुछवि दर्शाय रसिकवर, कीजिय लोचन सुफल हमारे। सदा रहो अनुराग पगे दोउ गुनशीला मम द्दगन सितारे ॥

दोहाः-सुनि इमि सखियन के बचन, जागे प्राण अधार।
प्यारी सों बोले बचन, कर गहि बदन निहार ॥ ४ ॥
अहो प्रिया जू जागिये, भयो भोर गइ रैन।
हँसि हेरिय रस पागिये, मम हिय आनंद दैन ॥ ५ ॥
दर्शन प्यासी सकल सखि, आईं प्रेम बिभोर।
रस सागर में बोरिये, चितय कृपा की कोर ॥ ६ ॥

सोरठाः-सुनि पिय के मृदु बैन, उठि बैठीं हँसि लाड़िली।
करि तिरछे द्दग शैन, ललकि लगीं पिय कन्ठ सों ॥ १ ॥

पदः-(३) जगे पिय प्यारी प्रेम रस साने। उठि बैठे दोउ रतन पलंग पर, गलबहियां दीन्हें अलसाने। छिटकि रहीं अलकें आनन पर, दोउकी दोउ सम्हारि सुख माने। गुनशीला लखि रूप माधुरी, हँसि दोउ अरस परस लपटाने ॥

(४) जगे दोउ पिय प्यारी हर्षाय। सिय प्रीतमप्रीतम प्यारी के कन्ठ रहे लपटाय ॥ कहुं द्दग खोलि परस्पर हेरत, बहुरि जात अलसाय। अँग मरोरत लै जमुहाई, मुख पर लट लहराय ॥ भूषन बसन

सम्हारत दोउ के दोऊ अति सुख पाय। गुनशीला लखि युगल माधुरी, बार बार बलिजाय ॥

सोरठाः-गुनशीला ढिग जाय, करि प्रणाम प्यारी पियहिं।
भूषन बसन सजाय, दर्पण हर्षि दिखावहीं ॥२॥
दोउ गलबहियाँ डार हँसि हँसि दर्पण देखहीं।
दोउ पर दोउ बलिहार, होत परस्पर निरखि छबि ॥३॥
सिय स्वामिनि रुखपाय, गुनशीला मनमुदित अति।
पर्दा दियो उठाय, लखि सब सखि जय जय करैं ॥४॥

छन्द रोलाः- दधि घृत मधु अरु बसन बिभूषन असन अपारा। बारत सखि बहु रतन करन साजे मणि थारा॥ सर्वेश्वरि श्री चारुशिला अतिसय सुख पाई। बन्दे सिय पिय चरण हृदय में अति हर्षाई ॥८॥

दोहाः-तब सब सखियां हिय हरषि, लागीं करन जुहार।
पूछत सियपिय कुशल हँसि, सबसे भरि अतिप्यार ॥७॥
गुनशीला मन मुदित एक, सुमन थार न्यौछाय।
करैं आरती हिय हरषि, मणिमय थार सजाय ॥८॥

मंगल आरतीः—मंगल आरति सिय रघुवर की। जनक लली रघुराज कुंवर की॥ रतन पलंग पर दिये अँश भुज, लसत नील मणि चम्पकली की॥ सेवा सौंज लिये प्रमुदित सखि, चंवर छत्र अरु व्यजन ढुरन की॥ मन्द हँसनि चितवनि मृदु बोलनि पगे प्रेम रस सिन्धु लहर की। नृत्यगान संगीत मधुर ध्वनि बर्षत सुमन जयति स्वर भर की॥ राई लोन उतारन तोरन त्रण बलिहार युगल छबि धर की। गुनशीला अवलोकि युगल मुख चन्द्र लजत शत चन्द्र शरद की॥ मंगल आरति ...

दोहाः—करि आरति दोउ के चरण, में झुकि कियो प्रणाम।
पाय प्यार दोउ को मुदित, भइ परिपूरण काम ॥९॥

बहु बिधि मधुर पवाय के, कछुक गरम पय प्याय ।
पान अतर आदिक दियो, मन्द मन्द मुसुकाय ॥१०॥

छन्द रोलाः—सखिन अंश भुज दिये मुदित मन प्रीतम प्यारी । चले हृदय हर्षाय सखिन जयकार उचारी ॥९॥ महलन बाहर आय बाग में बिहरन लागे । खिले सुमन बहु भांति निरखि अतिसय सुख पागे ॥१०॥

पदः-(५) बाग बिहार करत पिय प्यारी । भांति भांति के खग मृग बिचरत, बोलत श्रवण सुखद मनहारी ॥ लखि सिय पिय अति हिय हर्षावत, कबहुँ सुमन हँसि लेत उतारी । गुनशीला पिय देत प्रिया कर, भईं सिय पियहिं सुँघाय सुखारी ॥

पदः-(६) बाग में श्माम भ्रमर एक आयो । कली कली रस चाखत डोलत, चित न कहीं ठहरायो ॥ छबिसागर में बिकसित पंकज, लखि अति भ्रमर लुभायो । गुनशीला अरुझाओ तामधि शान गुमान भुलायो ॥

दोहाः-पकरि पढ़ावत खगन को, पुनि हँसि देत उड़ाय ।
मीन हँस गज के शिशुन, निरखत अति सुखपाय ॥११॥
बहु बिधि बाग बिहार करि, श्याम गौर सुखधाम ।
गवने झूलन कुंज में, मन मोहन अभिराम ॥१२॥

छन्द रोलाः- सिंहासन बैठाय सखिन स्वागत बहु कीन्हा । धूप दीप नैवेद्य आरती करि सुख लीन्हा ॥११॥ पुनि सखियन के संग लगे झूलन पिय प्यारी । गावहिं राग मलार सकल पावहिं सुख भारी ॥१२॥

पदः-(७) आली झूलत युगल किशोर । अति द्रुत झोंका देत सखी, पट उड़त हँसत मुख मोर ॥ मन्द मन्द बतरात परस्पर, चितवनि में चितचोर । भूषन बसन सुहावत अँग अँग नील पीत

पट छोर ।। दोउ चकोर दोउ चन्द्र निरखि छवि, होवत प्रेमविभोर । गुनशीला अवलोकि युगल छवि हँसि दोउ पर त्रण तोर ।।

(८) झमकि झुकि झूलत दोउ सरकार । श्री अवनिजा लिये सखियन संग अवध छैल रिझवार ।। अलिगन झमकि झुलावहिं गावहिं, कजरीमेघ मलार । गुनशीला रघुराज सिया की, छबि लखि लखि बलिहार ।।

दोहाः-झूलन झूलि समाज युत, सिय सिय बल्लभ लाल ।
आये बल्लभ कुंज में लखि सखि भईं निहाल ।।१३।।
चरण धोइ अचवाय पुनि, दतुवन दई रसाल ।
लागे दतुवन करन दोउ, फसीं सखी छबि जाल ।।१४।।

पदः-(९) दतुवन करत विहँसि पिय प्यारी । अति सुख प्रद अति सुन्दर रससय, अति कोमल मन हारी ।। करि जीभी मुख हाथ प्रछाले, सखी मार्जन करहिं सुखारी । गुनशीला गये अपने कुंज में, सखियन सकल शृंगार उतारी ।।

दोहाः-पचरंगी सुचि नवल पट, धारे अति छबिदार ।
अँगन भूषन जगमगत, लजत अमित रतिमार ।।१५।।
सिंहासन राजे मुदित, अचवन करि हर्षाय ।
दधि घृत मधु पावन लगे हिय में अति सुख पाय ।।१६।।

छन्द रोला - पुनि सखियन अचवाय पान दै अतर सुंघायो ।
सुमन माल पहिराय करन मणि थार उठायो ।।१३।।

पद्आरती (१०) सखि आरति करहिं युगलवर की अनुरागपगे सिय रघुवर की ।। भुज अंश दिये प्रीतम प्यारी, चितचोरन दोऊ छबि धर की ।। चारि चरण दुइ कटि प्रदेश, एक निरखि सु बदन मनोहर की ।। सखि ··· ।। बर्षावहिं हर्षाय सुमन सखि, जयति जयति जय स्वर भर की । गुनशीला रस रंग रँगे, उमगाय लगे हिय सियवर की ।। सखि ······

दोहाः-करि आरति दै अर्घ अरु, पुष्पांजलि त्रण तोर।
राईलोन उतारि छबि, निरखहिं प्रेम विभोर ॥१७॥
लगीं परिक्रमा करन सब, गावहिं मंगल गान।
पिय प्यारी रस निधि मगन, निरखौं मम अरमान ॥१८॥

पदः-(११)सदा यह जोरी रहे निहाल। पगे रहें अनुराग परस्पर जनकलली रघुलाल ॥ दोउ चकोर दोउ चन्द्र सदा हो फसे रहें छबि जाल। गुनशीला दोउ के रस रंग में रंगी रहें सब बाल ॥ सदा यह ....

पदः-(१२) दोउ रसिया मम दृगन बसोरी। मन्द मन्द मुसुकाय सुछबि लखि, एक एकहिं अँग अँग गसोरी ॥ पगे सरस अनुराग दृगन भरि, पियत अधर रस सुख बरसोरी। गुनशीला दोउ नवल रसिक वर मम हिय कुंज बीच बिलसो री ॥

सोरठाः-यहि बिधि गीत सुनाय, करि परिक्रमा सप्रेम सब।
रहीं चरण लपटाय, बैठीं निज निज थल सकल ॥५॥
अपर कुंज में जाय, चरणामृत लै सकल सखि।
दधि घृत मधु कुछ पाय, सिय पिय ढिग आईं मुदित ॥६॥
गुनशीला हर्षाय पान दियो हँसि हँसि सबहिं।
सर्वेश्वरि रुख पाय, लै चरणामृत आगईं ॥७॥

छन्द रोलाः-सखिन पवायो पान हाथ गहि लीन्ह विठारी।
गये मुदित स्नान कुंज प्रीतम अरु प्यारी ॥१४॥
लखि सखि उठीं सिहाय विबिध विधि स्वागतकरिके।
धूप दीप नैवेद्य आरती करि मुद भरि के ॥१५॥
करि प्रणाम लहि प्यार मणिन चौकिन बैठारी।
दोउ को सकल शृंगार सखिन तहँ लियो उतारी ॥१६॥

दोहा:-श्री चारुशिला पिय ओर भइं श्री प्रसाद सिय ओर।
अष्ट अष्ट सखि मिलि लगीं उबटन दोउ चित चोर ॥१६॥

पद:-(१३) उबटन करत सखी हर्षाई। विनु पट नील पीत तन शोभित, अति अनूप छवि वर्णि न जाई॥ कोइ सखि भुज कोइ उर कोइ चरणन कुछ मिलि पीठि रहीं उबटाई। गुनशीला सबसखियन उबटन, देवति स्वकर उठाइ छठाई॥

पद -(१४) परस्पर उबटन करत सिहाय। निज कर उवटन लै दोउ दोउ के, अँग मलत सुखपाय॥ दोउ के अंग दोउ परसि परस्पर हँसि हँसि रहे पुलकाय। गुनशीला दोउ रसिक रँगीले, मुखमीजत बरिआय॥

दोहा:-कुंजन में स्नान करि ललित सरोवर माहिं।
करिविहार तटपर गये, सुचिपट पहिरि सिहाहिं ॥२०॥

छन्द रोला:-पुनि हिय में भरि मोद यज्ञ मन्डप में आये।
कीन्हों बिधिवत यज्ञ रतन मणिदान कराये ॥१७॥
धेनु बिभूषन बसन असन भोजन असवारी।
पात्र दान करि पानि धोइ गवने पिय प्यारी ॥१८॥

दोहा: पुनि पति पूजन कुंज में, गये दोउ सखिन समेत।
सखिन उतारि शृंगार सब, बिरचेउ नवल सचेत ॥२१॥
पृथमहिं सिय जू ने हरषि, पूजे प्राण अधार।
प्यार पाय रसिकेश को, विलसीं बनिं गलहार ॥२२॥
पुनि सर्वेश्वरि ने मुदित, पूजे जीवन प्रान।
लहि प्रीतम के प्यार को पायो मोद महान ॥२३॥
ता पीछे सब सखिन ने पूजे प्राण अधार।
परम प्यार लहि पिया को भईं सकल बलिहार ॥२४॥

छन्द रोला:-गुनशीला भरि प्यार हृदय पूजे दोउ प्यारे।
धूप दीप नैवेद्य पान मलादि सम्हारे ॥१९॥
अतर करायो घ्रान हरषि पुनि आरति कीन्हीं।
दै सुअर्घ मन मुदित बहुरि पुष्पांजलि दीन्हीं ॥ ०॥

सोरठा:- तोरेउ सुमन उतारि, लीन बलइया मन मुदित।
सिय चरणन शिरधारि, हृदय परम सुख पायऊ ॥८॥
हरषि माल पहिराय, स्वकर शीश गहि लाड़िली।
पिय पद माहिं झुकाय, दीन मुदित भये प्राणधन ॥९॥

छन्द रोला: हँसि पहिराय माल पिय गरमें निजकर लीन्ह उठाई।
कियो प्यार बहुभांति लायहिय, कहौं कवन विधिगाई ॥१॥
गुनशीला गुरु कृपा कोरते कोउ हिय में अनुमाने।
नतरु मरै साधन अनेक करि, सपनेहुं सें नहिं जाने ॥२॥

दोहा:-पुनि सब सखिन समाज युत सिय सिय बल्लभ लाल।
गये कलेऊ कुंज में सखि सब भईं निहाल ॥२५॥
आकर आगे हँसि मिलीं कुंजेश्वरि भरि प्यार।
अर्घ पांवड़े दै कियो, स्वागत विविध प्रकार ॥२६॥

छन्द रोला: सिंहासन पधराय धूप अरु दीप उतारेउ।
करि आरति मनमुदित शीश चरणन पर धारेउ ॥२१॥
माल प्रसादी पाय सखिन अचवन करवाई।
परसि थार करजोरि, बिनय कीन्हीं शिर नाई ॥२२॥

सोरठा:-सखियन युत सुख पाय, करिय कलेऊ मन मुदित।
प्रेम सुधा बर्षाय, पूरन, कीजिय आश मम ॥१०॥

दोहा:-सुनि तिनके वर बैन हँसि, पावत दोउ सरकार।
हास विनोद करहिं सखी, पावहिं मोद अपार ॥२७॥

प्यारी निज कर कमल से दीन्हों पिय मुख ग्रास ।
तिमि प्रीतम ने सिया मुख, ग्रास दियो करि हास ॥२८॥

पद – (१५) कलेऊ करत सिया रघुलाल । अरस परस मुख ग्रास पवावत, छबि लखि होत निहाल ॥ हास विनोद मगन संग जेंवत अगणित नइ नइ बाल । गुनशीला अनुराग पगी सब, फसीं युगल छबि जाल ॥

(१६) कलेऊ करत युगल सरकार । अमित सहचरीं पाय रहीं संग, दोउ मुख चन्द्र निहार ॥ पिय प्यारी मुख प्यारी पिय मुख देवत ग्रास सम्हार । गुनशीला पवाय निज कर से दोउन पर बलिहार ॥

छन्द रोलाः-पाय कलेऊ सखिन सहित बैठे पिय प्यारी ।
कुंजेश्वरि अचवाय पवायो पान सुखारी ॥२३॥
अतर करायो घ्रान सुमन माला पहिराई ।
तब शृँगार सु कुंज चले सिय पिय हर्षाई ॥२४॥

दोहाः-गये शृंगार सु कुंज में सखिन सहित सियराम ।
लखि कुंजेश्वरि मन मुदित पायो मन अभिराम ॥२६॥
स्वागत बिबिध प्रकार करि, अर्घ पांवड़े देत ।
चलीं लिवाय समाज युत हिय अति प्रेम समेत ॥३०॥

छन्द चौ०ः-अलगअलग दोइ कुंजन में सखिन शृँगार उतारी ।
यथाउचित अँगन पुनि बिरचेउ तहँ नव सप्त सम्हारी ॥३॥
सहित समाज सिहाँसन राजे सियसिय बल्लभ प्यारे ।
बहुबिधि यन्त्र बजाय सखिन तब मृदु स्वर राग उचारे ॥४

सोरठाः-कुंजेश्वरि अचवाय, सिय रघुनन्दन को मुदित ।
फल रस पान कराय, पान अतर माला दई ॥११॥

होदाः-नव पल्लव संयुक्त सखि, सुमनन गुच्छ बनाय।
दीन्हों सिय पिय हाथ में, आरति करत सिहाय ॥२१॥

पद आरती (१७) सखि आरति करु सिय प्यारी की। प्रीतम अँशन भुज धारी की ॥ नख सिख भूषन बसन मनोहर रसिकन मन चित हारी की ॥ मन्द मन्द मुसुकाय परस्पर, नैन शैन बलिहारी की। चंचल चपल चतुर चित चोरनि चितवनि अति अनियारी की ॥ दोउ चकोर दोउ चन्द्र परस्पर, रूप रसिक छबि धारी की। गुनशीला त्रण तोरि सुमन भरि, जय जय कार उचारी की॥ सखि…

सोरठाः- करि आरति हर्षाय, सहित समाज मुदित भई।
करि परिक्रमा सिहाय, युगल चरण शिर नावहीं ॥१२॥

दोहाः-पिय प्यारी ने मन हरषि, माल प्रसादी दीन।
कर गहि कुंजेश्वरिन को, निज ढिग बैठा लीन ॥२२॥

छन्द रोलाः-बसन बिभूषन असन रतन भरि भरि मणि थारन।
सिय पिय पर न्यौछाय सखीं लागीं तहँ बारन ॥२५॥
पुनि दोउ सभा निकुंज माहिं आये पिय प्यारी।
लखि कुंजेश्वरि मुदित भई सुख लहेउ अपारी ॥२६॥

सोरठाः-मन्द मन्द मुसुकाय, आगे बढ़ि स्वागत कियो।
प्रेम न हृदय समाय, रोमांचित तन पुलक भो ॥१३॥

दोहाः-घूमत छज्जा पर हरषि, पिय प्यारी सुख पाय।
नगर विपिन गिरि सर अमित; छटा रही जहँ छाय ॥२३॥

छं० चौ०:-दूर दर्शिता यन्त्र माहिं लखि मिथिला पुरो सुहाई।
मगन सनेह विभोर भईं सिय हृदय मातु सुधि आई ॥५॥
निरखि दशा प्यारी की पिय ने, दीन्हों यन्त्र हटाई।
चलिये प्रिया बिलम्ब भयो अति, यों कहि हृदय लगाई ॥६॥

सोरठाः-सुनि प्रीतम के बेन, प्यारी भइ सचेत तब।
हँसि तिरछे दृग सैन, करिपिय तन चितवन लगीं ॥१४॥

छं० रो०:-सखिन समाज समेत मुदित सिहाँसन राजे।
चंवर छत्र व्यजनादि छरी सखियन कर छाजे ॥२७॥
कुन्जेश्वरि अचवाय मधुर फल भोग लगाई।
बहुरि अचय दै पान अतर माला पहिराई ॥२८॥

दोहाः-लै कर में मणि थार सखि, आरति करत सिहाय।
मृदु स्वर यन्त्र बजाय सखि, गान करत हर्षाय ॥२४॥

पद आरतीः-(१८ आरती सिय सिय प्यारे की, रसिक मणि अवध दुलारे की ॥ सिया पिय अँशन भुज धारे, सुछबि लखि दोउ तन मन वारे, मन्द हँसि बोलत दोउ प्यारे, रूप रस रंगे, परस्पर पगे, ललकि हिय लगे, जयति जय जय शब्द उचारे की ॥ आरती

चन्द्र मुख निरखत श्यामा श्याम, एक टक श्याम, गौर अभिराम, छटा लखि लजत अमित रति काम, गुनन गर्वीले, परम, छबीले, सु रसिक रंगीले, सरस चितवन मन हारे की ॥ आरती

चहूँ दिसि अगणित सखि गावें, वरषि प्रसून हिय हर्षावें, युगल छबि लखि लखि बलि जावें, चंवर कोइ ढोरें, दृगन दृग जोरे मुदित तृण तोरें, गुनशिला प्राण अधारे की ॥ आरती .....

सोरठाः-असन बसन भरि थार, रतन विंभूषन बिबिध बिधि।
न्यौछाये अति प्यार चरण कमल बन्दन किये ॥१५॥
माल प्रसादी दीन्ह, सिय सिय बल्लभ लाल ने।
सखिन शीश धरि लीन्ह, पायो हृदय अनन्द अति ॥१६॥

छं०रो०:-पुनि दोउ हास विनोद मगन सखियन रस पागे।
नव नव लीला करन लगे हिय अति अनुरागे ॥२९॥

कहुँ होली कहुं व्याह रास उत्सव कहुँ करहीं।
खेलत कहु आखेट सखन संग आनंद भरहीं ॥३०॥

दोहाः—कबहुं बधाइ बज रही, कहुँ झूलन के साज।
परमानन्द प्रवाह में डूबेउ सकल समाज ॥२५॥
कबहुं मान लीला करत, सखियन को सुख देत।
अज अजीत अनबद्ध सोइ हारि मानि रस लेत ॥२६॥

सोरठाः-चौपड़ खेल सिहाय, खेलत सखियन संग दोउ।
हृदय परम सुख पाय, निज चतुरता दिखावहीं ॥१७॥

दोहाः-पुनि दोउ भोजन कुंज में गये लड़ैती लाल।
कुंजेश्वरि मन मुदित भइं, निरखत रूप रसाल ॥३७॥

छं०रो०ः-सखिन उतारि श्रृंगार तहां पुनि नवल सजाई।
करि आरति हर्षाय चरण में शीश झुकाई ॥२१॥

दोहा—पाय प्रसादी माल पुनि, दोउ रसिकन अचवाय।
चरण धुवाय मुदित चलीं, सकल समाज लिवाय ॥२८॥

पद—(१९) रसिक दोउ चलत सखिन के संग। गलभुज दिये चकोर चन्द्र वनि, अंग अंग उठत उमंग॥ अरस परस लपटाय परस्पर रस की उठत तरंग। गुनशीला झुकि झूमि बदत हँसि, रंगे प्रेम रस रंग॥

(२०) हँसि हँसि चलत रसिक रस माते। कोटिन सखिन मध्य दोउ छबि पर, बहु रति काम लजाते॥ दोउ के दोउ अनुराग पगे, हिय लगे झूम झुकि जाते। दिये अँश भुज गुनशीला दोउ फूले नहीं समाते॥

दोहा— आये पंगत साल में, बैठे सखिन समेत।
थाल परसि कुंजेश्वरी, बोली बचन सचेत ॥२९॥
कीजिय भोजन मन मुदित, सखिन सहित हर्षाय।
पावन लागे रसिक दोउ, मन्द मन्द मुसुकाय ॥३०॥

पदः· (२१) भोजन करत प्रेम रस भीने। अमित सहचरिन संग मुदित दोउ पावत नेह नवीने ॥ हँसि हँसि सखियां स्वकर पवावहिं, लखहिं सुछवि कर दीने। गुनशीला मृदु गान करैं सखि विविध यन्त्र कर लीन्हें ॥

(२२) भोजन करत सिया रघुराई। गर भुज दिये परस्पर हँसि हँसि, दोउ के दोउ निज करन पवाई ॥ कर चूमत जब ग्रास देत सुख, निरखत दृगन सनेह बढ़ाई। परसत नइ नइ वाल हर्षि हिय कछु गावहिं रस गीत सुहाई ॥ षटरस भाँति भाँति के व्यंजन, पावत सखिन सहित सुखपाई। बीणा सितार बजाइ सखी गन तान अलापत रस बर्षाई ॥ अति आशक्ति ग्रास कर में लै, लखत सु छबि नहिं सकत पवाई। गुनशीला सखियन समाज युत पिय प्यारी पर बलि बलि जाई ॥

(२३) परस्पर भोजन करत सिहात। श्री अवनिजा अवध नृप नन्दन, श्याम गौर सुठिगात ॥ दोउ के दोउ रस रंग रंगीले, अंग अंग रस उमगात ॥ निज कर ग्रास पवावत प्रमुदित, सु छबि निरखि बलिजात ॥ मधुर मधुर स्वर गावहिं सखियां, प्रेमसुधा बर्षात। सुचि सरयू जल स्वकर पियावत, दोउ सुख सिन्धु समात ॥ रूपा शक्त बिभोर प्रेम में छबि लखि लखि न अघात। गुनशीला सखि अवलि नखत बिच, युग चन्दा दर्शात ॥

(२४) भोजन पावत सिय रघुवीर। श्याम गौर मनहरन युगल वर धरे नवल पटचीर ॥ परसत नवल नागरी हँसि हँसि, स्वकर पियावहिं नीर। गुनशीला कोइ मधुरव्यजन लै प्रमुदित करतसमीर ॥

दोहाः-पाये भोजन सखिन युत, पिय प्यारी सुख पाय।
कुंजेश्वरि समाज युत अचवाये हर्षाय ॥३१॥
गुनशीला सब को दियो, पान अतर मुसुकाय।
कोइ सखि सुमन सु माल हँसि रही सबहिं पहिराय ॥३२

शैनकुंज में जाय जब, करन लगे दोउ शैन।
सखियां मृदु स्वर गीत वर, गावहिं आनद दैन ॥३३॥
एक पहर सुख में पगे, सोये युगल किशोर।
पुनि बाजी जब दुन्दुभो, जागे दोउ चित चोर ॥३४॥

छं०रो०:-सखियन दोउन जगाय बिभूषन बसन सुधारी।
लै कर में मणि थार आरती करहिं सुखारी ॥३२॥
पुनि करि सकल प्रणाम अचइ कछु मधुर पवाई।
पय पियाय दै पान अतर माला सुख पाई ॥३३॥
बहुरि उबटि नहवाय बिभूषन बसन सजाई।
गै बसन्त अनुरूप बिपिन में दोउ हर्षाई ॥३४॥

दोहा:-स्वागत करि कुंजेश्वरी बैठारे सुख पाय।
कछु पवाय माला अतर पान दियो हर्षाय ॥३५॥

छं०रो०:-करि आरति मन मुदित युगल चरणन शिर धारी।
माल प्रसादी पाय दोउन की भईं सुखारी ॥३५॥
चढ़ि बिमान पर बहुरि सखिन सँग प्रीतम प्यारी।
श्री शृँगार बन माहिं गये अँशन भुज धारी ॥३६॥

दोहा:-लखि कुंजेश्वरि भइ मुदित, स्वागत बिबिध प्रकार।
करि सिय पिय पद कंज में, कीन्हों हर्षि जुहार ॥३६॥
रतन जड़ित भूषन बसन, लीन्हें सकल उतार।
सब को नख सिख लों कियो, सुमन केर शृंगार ॥३७॥

छं० रो०:-मधुर सु फलन पवाय सुचि सु मैरेय पियाई।
पान अतर दै ललित सुमन माला पहिराई ॥३७॥
करि आरति त्रण तोरि चरण में शीश झुकायो।
पाइ प्रसादी माल हृदय में आनंद पायो ॥३८॥

दोहा:-विहरत सिय पिय बाग में संग सब सखिन समाज।
जहँ षट ऋतु में सर्बदा रही बसन्त बिराज ॥३८॥

ललित फुहारे छुट रहे, कहुँ कहुँ कुंजन माहिं।
ग्रीष्म में पावस सरिस, अद्भुत चरित लखाहिं ।।३९।।
कहुँ फूलन की गेंद हँसि, खेलत सखियन संग।
झुकि झुकि मारत परस्पर, रँगे प्रेम रस रंग ।।४०।।

छन्द चौबोला।—

जल बिहार कहुँ करत सखिनसंग, कहिं बिचरत बन माहीं।
कबहूं बैठत सुमन कुंज में, सिय संग दै गलबाहीं ।।७।।
अति आशिक लखि प्रिया बदन श्रम, सीकर करत बयारी।
निज कर अलक सम्हारि चूमि मुख, हिय अति होत सुखारी ।।८।।

दोहा:-निज करतल लै सिय चरण, चूमत हँसि अति हेत।
ब्रह्म सच्चिदानंद घन रस बिशेष रस लेत ।।४१।।
ललित महावर स्वकर लै, जीवन प्राण अधार।
रचत चित्र सिय चरण में, सभय सुधार सुधार ।।४२।।

छं०रो०:-रचत बिबिध बिधि चित्र सिया पद कंजन माहीं।
निरखि अमित माधुरी बार बहु बलि बलि जाहीं ।।३९।।
दृष्टि दोष जनि लगै सभय हिय में सकुचाहीं।
बारि बारि जल पियत, बिधिहिं करजोरि मनाहीं ।।४०।।

छं०चौ०:-अति असक्त पलछिन प्यारी से होन चहत नहिं न्यारे।
गुनशीला अनुराग प्रिया को लखि तन मन धन बारे। ९

दोहा:-तैसेहिं प्यारी ने कियो, पिय को ललित शृँगार।
सुमन बिभूषन बसन वर, निज कर सकल सुधार ।।४३

छं०चौ०:-जैसे प्यारे ने प्यारी को करि दुलार सुख पायो।
तैसेहिं प्यारी ने प्रीतम को सुख रस स्वाद करायो ।।१०।।

दोहा:-यहि विधि विपुल विहार बन, करत रसिक शिर मौर।
मगन प्रेम रस सिन्धु में, दोउ जन श्यामल गौर ।।४४।।

दोउ पर दोउ बलिहार नित, बने रहत गल हार।
गुनशीला यहि बिधि बसो, मम हिय कुंज मझार ॥४५॥

सोरठाः-करि दोउ बाग बिहार, सरयू तट बिहरत हुए।
बिपिन प्रमोद मझार, गये कुंज शृँगार जहँ ॥ १७॥
सुमन शृँगार उतार, रत्न मणि जड़ित जगमगत।
भूषन बसन सुधार, कियो नवल शृंगार तहँ ॥१८॥

छ०रो० -बहुरि कलेऊ कुंज माहिं आये पिय प्यारी।
करत कलेऊ सखिन संग मन होत सुखारी ॥४६॥

सोरठाः-बिरचे सखिन अपार, खोवा के खग मृग विपुल।
पाक बिबिध रस हार, पावत युगल किशोर मिलि ॥१६॥
करि बहु हास बिनोद, सखिन संग प्रीतम प्रिया।
परमानन्द प्रमोद, भरे रास मन्डप गये ॥२०॥

दोहाः-सुमन माल पहिराय सखि, अतर देत हर्षाय।
गुनशीला देवत सबहिं, पान मन्द मुसुकाय ॥१५॥
लागीं आरति करनसखि, हृदय परम सुखपाय।
जय जय कार करैं सकल, बर्षत सुमन सिहाय ॥४६॥

रास आरती पदः-(२५) सखि आरति करु पिय प्यारी की। रघुवर श्री जनक दुलारी की ॥ श्याम गौर मनहरन रसिक वर हर्षि अँश भुज धारी की ॥ सखि ... ॥ मन्द हँसनि बतरानि परस्पर, नयन नयन मतवारी की। बंक भृकुटी चितवनि रसमाती रसिकन मन चित हारी की ॥ अंग अंग रूप माधुरी झलकत, रघुनन्दन सिय प्यारी की ॥ बिबिध यन्त्र बाजत सखि गावत, नृत्यत मिलि कर धारी की ॥नख सिख रूप अनूप सलोने, रासरसिक छबि धारी की। निरखत नेह भरे दृग कोरनि, छबि रस रूप उजारी की। चंवर छत्र अरु व्यजन डुरावनि, सुमन बर्षि जय कारी की।

राई लोन उतारनि तोरनि त्रण दोउ पर बलिहारी की ॥ अबिचल जोरी रहै रंग भरी, निरखौं द्दगन पसारी की। गुनशीला अवलोकि बदन विधु, अनुदिन रहत सुखारी की ॥ सखि आरति…॥

छ०रो०:–करि आरति मन मुदित चरण में शीश झुकायो।
पिय ने कर गहि बिहँसि आपने ढिग बैठायो ॥४२
पाय परसादी माल भयो हिय में सुख भारी।
होन लगेउ पुनि रास सकल मिलि नृतत सुखारी ॥४३॥

दोहाः–बीण मृदंग सितार अरु; बंशी अति सुख रूप।
बेणु झांझ करताल ढफ ढोलक चंग अनूप ॥४७
गावन लागीं सकल मिलि, अति मधुरेश्वरगान।
मृदुस्वर यन्त्र बजाय के, लेत नई नइ तान ॥४८

रास के पदः–

(२६) लखोरी सखि नृत्यत युगल किशोर। श्री मिथिलेश लली रघुनन्द, नवल रसिक शिरमौर ॥ चहुँदिशि अलिगन नृत्यत गावत, रस की उठत हिलोर। मध्य बिराजत युगल रसिक मणि, सखियन मन चित चोर ॥ बिबिध यन्त्र बाजत मधुरे स्वर श्रवण सुखद रस बोर। तान अलापत रस वर्षावत, हँसि तिरछे द्दग कोर ॥ रंगे सरस अनुराग परस्पर, लगि हिय श्यामल गोर। दै गलबाँह पियत अधरामृत, बनि दोउ चन्द्र चकोर ॥ नख सिख रूप अनूप दोउन को, भूषन बसन उजोर। गुनशोला लखि युगल माधुरी, भइ निहाल त्रण तोर ॥

(२७) सखीरी नृत्यत दोउ चित चोर। श्री अवनिजा अवध नृप नन्दन, मिलि दोउ श्यामल गोर ॥ रूप सुधारस छके मुदित दोउ, विहँसि द्दगन द्दग जोर। चारों दिशि सखि नाचैं गावैं, पावैं मोद अथोर ॥ झूमि झूमि मुख चूमि परस्पर, भै दोउ चन्द्र चकोर। अलिगन हिय में निरखि युगल छबि, रस की उठत

हिलोर ।। वीणा वेणु मृदंग मुरलिका, कोइ सितार टंकोर । युगल सखी कर शुभ्र चंवर लिये, मुदित दोउन शिर ढोर ।। अमित रूप धरि सब सखियन संग, रमत रसिक शिरमौर । देव प्रसून बरषि जय बोलत, लखि लखि प्रेम बिभोर ।। अति आशक्त प्रिया प्रीतम दोउ, होन चहत नहिं भोर । गुनशीला रस रँग रंगीले, लखत दृगन की कोर ।।

दोहा:-यहि बिधि रास बिलास करि सखिन सहित सियराम ।
गये मनोग सुकुंज जहँ, दोउ छबि निधि सुखधाम ।।४१

छं०रो०:-लखि कुंजेश्वरि दौरि कियो स्वागत हर्षाई ।
सिंहासन पधराय आरती करि सुख पाई ।।४२
कबहुँ व्याह तहँ होत कबहूँ होली की लीला ।
बजत बधाई रंग भरी कबहूँ गुनशीला ।।४३

फाग उत्सव

पद:- (२८) होरी मन भाई आई हो । सखा सखी गन हर्षि परस्पर, रंग बर्षा झरि लाई हो ।। दोउ दिशि जय जय कार करत सब डफ करताल बजाई हो । गुनशीला सो सुख समाज कोउ केहि मुख बरनि सिराई हो ।।

(२९) होरी अति सुखद सोहाई हो । दोउ दिशि चलत कनक पिचकारी, शन शन शब्द सुनाई हो ।। रंग बर्षावत कुम कुम मारत, अबिर गुलाल उड़ाई हो । गुनशीला लपटाय परस्पर, मुख मीजत बरियाई हो ।।

(३०) होरी रस मय सुखदाई हो । फागुन मास सुहावन पावन, ऋतु बसंत छबि छाई हो ।। सब तरु नव पल्लव प्रसून युत, कोयल प्रिय ध्वनि लाई हो । सिय पिय सखी सखा प्रमुदित मन, आनँद

उर न समाई हो ।। करन लसे कंचन पिचकारी, झोरी अबीर सुहाई हो । नख सिख शुभग शृंगार सजाये, अँग अँग रस उमगाई हो ।। ललित कलित पिय के अंग जामा, शिर पर पाग सुहाई हो । मोतिन की कलंगी चित चोरति, चितवनि अति सुखदाई हो ।। सुठि सारी सिय के अंग शोभित, भूषन छबि छहराई हो । दुहुं दिशि जय जय कार करत हँसि, बाजत डफ सहनाई हो ।। बर्षत रंग गुलाल उड़ावत, कुम कुम की झरि लाई हो । लपट झपट मुख मलत परस्पर, गावत मृदु मुसुकाई हो ।। उड़त अबीर लाल भै बादर, रंग की नदी बहाई हो । सर्वेश्वरि श्री चारुशिला रुख पाय, अलीगन धाई हो ।। विमला चन्द्र कलादि रँगीली, पियहिं पकरि लै आई हो । सिय रुख पाय सखिन प्रीतम को, बनिता वेष बनाई हो ।। कटि सारी कंचुकि जरतारी, चुनरी शिर से उढ़ाई हो । पग बिछिया कर में सुठि चूरी, नकवेसर पहिराई हो ।। स्वामिनि आगे लाइ सखिन, करगहि भरि मोद नचाई हो ।। हँसि बोलीं सिय कहहु लला अब, कहँ गये सखा समुदाई हो । जिनके बल बढ़िबढ़ि बोलत थे, उर अभिमान बढ़ाई हो । सुनि प्यारी के बचनप्राण धन, बोले हिय सकुचाई हो ।। जो भावे सो कहहु प्रिया जू, नहिं कछु मोर बसाई हो । अबलन प्रेम बिबस मोहिं कीन्हों, चलै न मम बरियाई हो ।। यह मम रीति सदा से जो कोइ, मोसे प्रीति लगाई हो । वापर सर्बस वारि आपनो, बिन ही मोल बिकाई हो ।। प्रेम पास में बांधि चहै फिर, जैसा नाच नचाई हो । सुनि इमि सरस बैन प्रीतम के, सिय दीन्हों छुड़वाई हो ।। पुनि दोउ हर्षि सिंहासन राजे, अरस परस लपटाई हो । युगल रंगीली सु छबि निरखि सखि, जय जयकार मचाई हो ।। करन लगीं आरती मुदित मन सुमन बर्षि हर्षाई हो । गुनशीला लखि नवल रंगीली, जोरी पर बलिजाई हो ।।

❀ बधाई उत्सव ❀

पदः-(३) नृपति गृह बजति बधाई घनघोर। मंगल कलश वितान सजाये, ध्वज पताक चहुँ ओर॥ प्रमुदित गावत पुर नर नारी, उठत अनन्द हिलोर। सुमन बर्षि जय जय सुर बोलत, महल मध्य अतिशोर॥ छिरकत चन्दन अविर उड़ावत, उड़त सुगन्ध झकोर। गुनशीला नभ में सुर बनिता, नृत्यत प्रेम विभोर॥

(३२) बधाई बजतति नृपति के द्वार। पुर नर नारि मगन हो गावत,नृत्यत हिय भरिप्यार। कोइ आवत कोइ जात मुदितमन,बाढ़ी भीर अपार। सम्पतिहर्षि लुटावहिं पुरजन, तन की नहीं सम्हार॥ हर्षत देव सुमन बर्षावत, बोलत जय जय कार। सुर बनिता नाचत नभ माहीं . कौतुक होत अपार॥ हर्षि नृपति गज़बाजि लुटावहिं, भरि भरि मोतिन थार। रानी मुदित बसन मणि भूषन, रत्न जड़ित बहु हार॥ गुनशीला मन मगन भयो सुख, बरनि को पावे पार। चारिहुँ राजकुंवर चिरजीवो यह अभिलाष हमार॥

छं०रो०:-पुनि दोउ झूलन कुंज माहिं आये पिय प्यारी।
स्वागत करि बहु भांति सखिन आरती उतारी॥४४

दोहा:-तब झूलन लागे मुदित सिय पिय हिय हर्षाय।
झमकिं झुलावहिं सहचरी कजरी सावन गाय॥५०

पदः-(३३) आज सखि पावस ऋतु सुखदाई। उमड़ि घुमड़ि बादर नभ छाये,, दामिनि द्युति दमकाई॥ शीतल मन्द सुगन्ध मनोहर पवन चलत सुखदाई। गरज़ि गरज़ि घन रिमझिम बर्षत, कोयल प्रिय ध्वनि लाई॥ नटत मोर कुंजन में पपिहा, पिउ पिउ शब्द सुनाई। कीर चकोर हंस बक जहँ तहँ उड़त सु छबि दर्शाई॥ तरु नव पल्लव सुमन सुसज्जित, लता ललकि लपटाई।

कदम कि डार सखिन मन मोहन झूला दियो लगाई ॥ कजरी गावत झमकि झुलावत मधुर सु यन्त्र बजाई। दै गलबांह मन्द हँसि झूलत सिया सहित रघुराई ॥ सरयू लेत हिलोरें सुर गन, बर्षत सुमन सिहाई। गुनशीला दोउ रसिक परस्पर लपटत हिय हर्षाई ॥

पद (३४) झूला झूलें सरयू कूले सखिन संग पिय प्यारी ना। उमड़ि घुमड़ि बादर नभ छाये, गर्जत लागत परम सुहाये, दमदम दमक रही दामिनिया रिम झिम बर्षे बारी ना॥ बोलत कुंजन मोर सुहाये, पपिहा पिउ पिउ शब्द सुनाये, डाल डाल पर अति मन भावन बोलति कोयल प्यारी ना॥ सखियां कजरी राग सुनावैं, पिय प्यारी को झमकि झुलावैं, नृत्यहिं हिय उमगाय अलीगन ह्वै वलिहारी ना॥ सुर गन नभ प्रसून बर्षावें, हर्षि सरस दुन्दुभी बजावें; सिय पिय परम प्रेमरस भीने लपटे गल भुजधारी ना॥ गुन· शीला दोउ रस मतवारे, पियत अधर रस परम सुखारे, निरखत बदन मयंक एक टक तन मन बारी ना॥

(३५) झूला परेउ कदम की डारी झूलत प्रीतम प्यारी ना। अलिगन झमकि झुलावहिं गावहि पावहिं मोद अपारी ना॥ कहुँ घन गर्जत बिजुली चमकत रिमझिम बर्षत बारी ना। मोरवा शोर मचावत अति प्रिय बोलत कोयल प्यारी ना॥ मृदु हँसि दोउ के दोउ चित चोरत, छबि लखि लखि बलिहारी ना। सखियां युगल सु छबि अवलोकत, बर्षत सुमन,सुखारी ना॥ चन्द्र चकोर बने पिय प्यारी निरखत पलकहु डारी ना। गुनशीला सिय पिय झूलन लखि तन मन सर्बस बारी ना॥

(३४) सखी री निरखहु हिय भरि प्यार। झूलत राज किशोर किशोरी, हँसि हँसि गलभुज धार॥ उमड़ि घुमड़ि घन गर्जत बर्षत, रिम झिम बुन्द फुहार। दामिनि दमक रही घन माहीं छाई छटा

अपार ।। श्री जानकी घाट में अनुपम, श्री चारुशिला वर बाग। तहँ नित झूलत प्रीतम प्यारी, ललित हिंडोरा लाग ।। कोकिल, चातक, कीर पपीहा कुंजन करत पुकार। नटत मयूर लता कुंजन में, भ्रमर करत गुंजार।। वीण मृदंग बजाय अलीगन गावहिं मेघ मलार। देव सुमन बर्षाय मुदित मन बोलत जय जय कार ।। यह झूलन नित अचल रहे अस, शुभ आशीश हमार। गुनशीला लखि सरस माधुरी, रहौं सदा बलिहार ।।

सोरठा-इमि झूलत हर्षाय, सदा सखिन संग सीय पिय।
महलन ते सखि आय, गईं लिवाय बिमान चढ़ि ।।२१
आये महल मझार, सब शृँगार बदलेउ तहां।
सखिन हृदय भरि प्यार, आरति करि अचवायऊ ।।२२

दोहा: पुनि ब्यारू करने लगे, सखिन सहित सियराम।
कुंजेश्वरि परसत सबहिं छबि लखि पूरन काम ।।५१

पदः-[३५] ब्यारू करत रसिक रस माते। सिय रघुवीर परस्पर दोऊ दोउ को स्वकर पवाते।। सिय मुख छबि लखि भै एक टक पिय, नाहिन ग्रास चबाते। अधिक अधिक अनुराग रँगत छन छन नव नेह बढ़ाते ।। सिय जब ग्रास देत पिय मुख में, कर चूमत सुख पाते। तैसहिं प्रीतम प्रियहिं ग्रास दै हिय में अति हर्षाते।। परसत नवल नागरी हँसि हँसि, सिय पिय उर लपटाते। गुनशीला अलि अवलि नखत बिच युग चन्दा दर्शाते ।।

[३६] ब्यारू करत सिया रघुराई। अरस परस दोउ खात खवावत, मन्द मन्द मुसुकाई ।। सिय जब ग्रास दियो पिय मुख में, स्वाद सराहत अति सुखपाई। पिय जब ग्रास दियो हँसि सिय मुख, निरखि बदन छबि गये बिकाई।। एकटक भये निमेष न लावत, सकत न ग्रास पवाई। लखि पिय की यह दशा लाड़िली, बोलीं नेह बढ़ाई ।। का सोचत पिय ग्रास पवाइय, सुनि पिय मन सकुचाई।

लगे पवावन प्रान प्रिया को, रस बस हिय उमगाई ।। लखि सखि जय जय कार उचारत, बार बार हर्षाई। गुनशीला लखि नवल रंगीली जोरी पर बलि जाई ।।

दोहाः-अचवन कीन समाज युत, सिय पिय हिय हर्षाय।
घ्रान करावत सखि अतर सुमन माल पहिराय ।।५२
गुनशीला सबको दियो, हँसि हँसि पान पवाय।
रंगमहल गवने मुदित पिय प्यारी सुख पाय ।।५३
पाय प्रसादी अपर सखि, आईं सिय पिय पास।
पाय पान माला अतर, बैठीं सहित हुलास ।।५४

कवित्त

[१] रंगभवन द्वार से ही सकलसखि विदा भई,
मुदित मन निज निज सु कुंजन सिधाई हैं।
अष्ट षोड़स बत्तिस अरु चौंसठ प्रधान सखि,
निमि कुल प्रसूता जो सिया मन भाई हैं ।।
चलीं पिय प्यारी साथ मनमें प्रमोद भरि,
रंग महल मध्य शैन पलंग ढिग आई हैं।
शैन पलंग ऊपर बिराजे चित चोर दोउ,
चारों ओर बैठीं सब सखि हर्षाई हैं ।।

छं०रो०:-सर्वेश्वरि श्री चारुशिला जू की रुख पाई।
गुनशीला अचवाय दोउन पय पान कराई ।।४५
बहुरि अचइ दै पान अतर माला पहिराई।
लागीं आरति करन हृदय में आनद पाई ।।४६

दोहाः-चँवर छत्र व्यजनादि लै छबि निरखहिं सुख पाय।
आरति गावन लगीं सब सुमन बर्षि हर्षाय ।।५५

शैन आरती पदः—

[३७] शैन आरती करु हर्षाई। युगल सु छबि लखि लखि सुख पाई ।। सिय पिय राजत रतन पलंग पर, अंशन भुजा दिये

लपटाई। मन्दमन्द हँसि लखत सखिनतन, सबको मनचित लेतचुराई॥ पिय प्यारी जब अरस परस हँसि, निरखत सु छबि सनेह बढ़ाई। दोउ की दोउ माधुरी पान करि, जात अपनपौ सकल भुलाई॥ सुमन बर्षि सखि जयजय बोलत, दोउ छबि लखि त्रण तोरि सिहाई गुनशीला रस रंग रंगीली जोरी अचल रहे मन भाई॥ शैन आरती

सोरठाः-राईलोन उतारि, मुदित बलैइया लै सकल।
करि परिकरमा चारि, युगल चरण शिर नावहीं ॥२३
गुनशीला हर्षाय, युगल चरण बंदन किये।
माल प्रसादी पाय, हृदय परम सुख पावहीं ॥२४

दोहाः-पुनि दोउमिलि सोवन लगे, सिय पिय उर लपटाय।
चरण दबावत सकल अलि, उर अति आनंद पाय ॥५६
रस बस पिय प्यारी भये, जब निद्रा आधीन।
चरण बन्दि सब सखि तुरत, गवनी परम प्रवीन ॥५७
निज निज कुंजन में सकल, सोईं हिय सुख पाय।
गुनशीला निज कुंज में, सोवत सिय पिय ध्याय ॥५८

छं०रो०ः- अष्टयाम भावना रसिक जन आनंद कारी। अभिमानी बाचाल कुर्तकी नहिं अधिकारी ॥४७ जेहि पर श्री गुरु कृपा स्वाद याको सोइ जाने। बहु साधन करि मरै नहीं याको पहिचाने ॥४८॥ जे श्रृद्धालू सदा संत गुरु पद रज ध्यावें। अमृत हू ते सरस भावना यह सोइ पावें ॥४९ करि बहु जोग समाधि ज्ञान अभिमान बढ़ाई। पचिपचि जगमें मरै कदा नहिं यह रस पाई ॥५० जो तजि सकल बिकार हृदय धारै गुरु चरना। सोइ पावें गुरुकृपा और साधन नहिं बरना ॥५१ अष्टयाम भावना माहिं निज ध्यान लगावे। गुनशीला गुरु कृपा अवसि सिय पिय ढिग जावे ॥५२

दोहाः-गुनशीला संसय नहीं मानिय निज मन माहिं।
श्री गुरु कृपा प्रसाद से गुप्त चरित दर्शाहिं॥

॥ अष्ट पार्षद ॥

दोहा:—परब्रह्म परमात्मा परतर सीताराम ।
तिनके अष्ट सु पार्षद बरनौं तिनके नाम ॥

छं०रो०:-सीताराम प्रधान पार्षद कहौं बखानी ।
अष्ट सकल सुखधाम रूप छबि निधि गुन खानी ॥१
यहि धरि रूप अनेक सखा अरु सखीं मनोहर ।
सेवत युगल किशोर चरण पंकज अति सुन्दर ॥२
सर्वेश्वरि श्री चारुशिला सुभगा गुनखानी ।
पद्म सुगन्धा बरारोहा हेमा सुखदानी ॥३
क्षेमा क्षेम स्वरूप लक्ष्मणा लक्षण रूपा ।
सुलोचना कमनीय प्रेम रस रूप अनूपा ॥४
ये सब पिय की ओर रहहिं लीला रस पागीं ।
निरखि युगल सुख चन्द्र माधुरी अति अनुरागीं ॥५
यहि धरि दूसर रूप रहहिं सिय स्वामिनि ओरी ।
तिनके पावन नाम कहौं मैं दोउ कर जोरी ॥६
श्रीप्रसाद हरिप्रिया श्रीजी आनद दानी ।
वागीसा अरु विश्वमोहिनीं सब सुख खानी ॥७
अतिशीला अति सरल सुशीला शील स्वरूपा ।
श्रीविमला अतिबिमल हृदय गुननिधि छबि रूपा ॥८
ये रहि सिय जु कि ओर सदा सेवहिं सुखमानी ।
इनके रस बस रहत सदा ही सारंग पानी ॥९
यद्यपि सखी अनेक सकल रस प्रेम स्वरूपा ।
तद्यपि ये सब परम विलक्षण अमल अनूपा ॥१०
यद्यपि सखि सब पिय प्यारी को प्रान समाना ।
तदपि सदा षोड़स पावत अतिशय सनमाना ॥११

———

॥ शुभ अभिलाषा ॥

जय जय कृपा गुन शील स्वभाव भरी, मिथिलेश किशोरी की जय २ ।
जय जय महा रस रंग रँगी, पिय प्रेम पगी अति भोरी कि जय २ ॥
जय जय सदा मुद मोद भरी, पिय श्याम घटा बिच गोरी कि जय २ ।
जय जय कहे गुनशीला, प्रेम रस लीला पगी रस बोरी कि जय २ ॥१
जय जय सदा रसिकेश्वर जय, प्राणेश्वर प्राण अधारे कि जय जय ।
जय जय महा रस रंग रँगीले, छबीले जनेश दुलारे कि जय जय ॥
जय जय सदा हृदयेश्वर जय, अवधेश्वर नयनन तारे कि जय जय ।
जय जय कहे गुनशीला, प्रेम रस लीला पगे सिय प्यारे कि जय जय ॥२
जय जय महा सुख सिन्धु दोऊ, सिय प्रीतम छैल छबीले कि जय २ ।
जय जय परस्पर प्रेम पगे, रस रंग रँगे गर्बीले कि जय जय ॥
जय जय चकोर निशेश दोऊ, हिय प्यार भरे सु सजीले कि जय २ ।
जय जय कहे गुनशीला, प्रेम रस लीला सु रंग रँगीले कि जय जय ॥३
जय जय रहें सखि वृन्द सदा, सिय प्रीतम प्रान अधारी कि जय जय ।
दोउ के सुठि सुन्दर रूप रँगी, कर सेवा सौज सवांरी कि जय जय ॥
व्यजनादिक छत्र लिये कर में, सब बोलि रहें जयकारी कि जय जय ।
जयजय कहे गुनशीला, सबै मिलि बोलो श्री प्रीतम प्यारी कि जय २ ॥४

दोहाः-जय जय जय प्रीतम प्रिया, सखियन जीवन प्रान ।
पगे रहो रस में सदा, यह मम मन अरमान ॥४
हे रसिके पिय रंग रँगी, सखियन प्रान अधार ।
पिय सँग सुख सानी रहो, यह अभिलाष हमार ॥ २

हर प्रकार की सुन्दर छपाई के लिए

श्रीसीताराम प्रेस

प्रमोदबन, श्रीअयोध्याजी

में पधारें।